[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3461

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

''सिने संगीत में शास्त्रीय प्रयोग–संगीतकार स्व. नौशाद द्वारा''

आरती दुबे
सहा. प्राध्यापक, संगीत,
माखनलाल चतुर्वेदी शासकीय स्नातकोत्तर कन्या खण्डवा

संगीत के विविध रूपों में सुगम संगीत का विशिष्ट स्थान है। इस विधा के अंतर्गत आने वाला सिने संगीत या चित्रपट संगीत जनमानस में अन्य विधाओं की अपेक्षा सर्वाधिक लोकप्रिय है। अपनी सरलता चमत्कारपूर्ण अभिव्यक्ति की प्रधानता और भाव प्रवणता के कारण यह जनमानस में अत्यंत लोकप्रिय है। सिने संगीत की जनसाधारण में अत्यंत लोकप्रियता के अनेक कारण हैं।

सिने संगीत शब्द प्रधान एवं भाव प्रधान होता है। इस कारण जनसामान्य को उसमें अपनी भावनाएँ अपना सुख दुःख नजर आता है और वो इसके सरलतम रूप में अपनी व्यक्तिगत जिंदगी की स्थितियों के अनुभव के रूप में अपने आपको देख पाता है, इसकी सादगी के जरिए उसे यही महसूस होता है कि यह सब उसी के जीवन में घटित हुआ है या हो रहा है। गीत की धुनों में क्लिष्टता नहीं होती, शास्त्रीय संगीत की तरह यह नियमों में बंधा नहीं रहता इसलिए गीतों की धुनें सरल और सीधी होती हैं। जिसे संगीत की जानकारी नहीं भी होती है वो भी इन्हें गुनगुना या गा लेता है।

फिल्मी संगीत में हमें संगीत के हर रूप के दर्शन होते है जैसे शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, परम्परागत धुनें आदि। कुछ संगीत निर्देशक फिल्म की कहानी आदि के मुताबिक कभी शास्त्रीय रागों पर आधारित तो कभी अलग–अलग आंचलिक लोक धुनों पर आधारित, तो कभी मिला–जुला संगीत अपने गीतों में देते हैं जिससे श्रोताओं को हर तरह के संगीत का रसास्वादन होता है।

फिल्मी संगीत 3 या 4 मिनिट या कुछ सेकेण्ड्स के अंदर ही वह काम कर देता है जो कई बार बड़े कलाकार कई–कई देर की प्रस्तुतियों द्वारा भी नहीं कर पाते या दर्शक या श्रोताओं का मनोरंजन नहीं कर पाते। आज लोग अपनी व्यस्ततम ज़िंदगी में कुछ समय में ही या त्वरित रूप से मनोरंजन चाहते हैं और सिने संगीत दैनिक जीवन की जटिलताओं में उलझे हुए लोगों को समय की बचत करा कर त्वरित और भरपूर मनोरंजन प्रदान करने में सक्षम है।

भारतीय सिने संगीत का युग आज से 83 वर्ष पूर्व सर्वप्रथम सवाक फिल्म ''आलमआरा'' से शुरू होता है जो 14 मार्च 1931 को प्रदर्शित हुई थी। मूक फिल्मों में प्रदर्शन के समय हारमोनियम, तबला, सितार व सारंगी वादक वहाँ उपस्थित रहते थे और प्रदर्शन के समय एक व्यक्ति बोलकर समझाता रहता था कि दृश्य में अमुक चीज़ दिखाई जा रही है और वहाँ पर्दे के सामने बैठे साजिंदे दृश्य के अनुसार वादन करके पार्श्व संगीत देते थे।

मारवान ईरानी की इम्पीरियल मूवी टोन कंपनी के द्वारा बनाई फिल्म ''आलमआरा'' का प्रदर्शन मुंबई के ''मैजिस्टिक सिनेमाघर'' में किया गया था। इस फिल्म में 6 गाने थे। इस फिल्म के डब्ल्यू. एम. खान फिल्मी पर्दे पर सबसे पहले गीत गाने वाले गायक कलाकार थे, जिन्होंने ''दे दे खुदा के नाम पे प्यारे, देने की गर हिम्मत है'' गाया था।

चित्रपट संगीत की आरंभिक अवस्था से लेकर 60–70 के दशक तक सिने संगीत में शास्त्रीय संगीत का प्रयोग बहुतायत हुआ है। आरंभ में शास्त्रीय संगीतकार ही फिल्म संगीत की रचना करते थे और प्रत्येक संगीतकार किसी ना किसी सांगीतिक घराने का शिष्य हुआ करता था। उस समय के लगभग सभी संगीत निर्देशकों की रचनाएँ शास्त्रीय संगीत पर ही आधारित होती थी। 1931 से 1941 तक विविध रंगों में घरानेदार संगीत के प्रयोग होते रहे, न्यू थियेटर्स में रवीन्द्र संगीत छाया हुआ था, बाम्बे टॉकीज से सरस्वती देवी व एस.एन. त्रिपाठी शुद्ध रागों की बंदिशें देते थे तो प्रभात से मराठी नाट्य संगीत प्रस्तुत होता था। इसके बाद गुलाम हैदर ने नए वाद्यों का प्रयोग कर संगीत को और मधुरता प्रदान की। इसके बाद सी. रामचन्द्र, संतोषीजी के साथ कुछ फिल्मों में पश्चिमी धुनों की सहायता से फिल्म संगीत में एक नया मोड़ ले आए। बाद में हुस्नलाल–भगतराम, ओ.पी. नैयर, शंकर–जयकिशन, रोशन, मदनमोहन और आर.डी. बर्मन का युग आया जो नौशाद साहब के साथ–साथ लगभग 20 वर्षों तक छाया रहा।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सिने संगीत के इतिहास पर दृष्टि डालें तो कुछ संगीतकार ऐसे हुए है जिन्होंने संगीत की शास्त्रीयता को साथ लेकर उसे अत्यंत आकर्षक, सहज और सरल तरीके से अपने संगीत में प्रयोग किया है, उनके इस संगीत में सुंदरता, सरलता और रंजकता है क्लिष्टता नहीं रही। इनमें खेमचंदप्रकाश, रविशंकर, खैयाम, हृदयनाथ मंगेशकर, सलिल चौधरी, बंसत देसाई, मदनमोहन, सी. रामचन्द्र, एस.डी. बर्मन, कल्याणजी आनंदजी, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल जी प्रमुख हैं। इन प्रमुख संगीतकारों में सबसे उपर नाम आता है संगीतकार ''स्व. नौशाद अली'' साहब का।

अपने समकालीन संगीतकारों में आप ही ऐसे संगीतकार रहे जिन्होंने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा और संपूर्ण जानकारी होने की वजह से हिन्दी फिल्म संगीत में शास्त्रीय रागों का बखूबी और सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया। आपके द्वारा रचित लगभग सभी गाने शास्त्रीय रागों पर आधारित होने के बावजूद आपका दिया संगीत हमेशा सुपरहिट रहा और हर खास एवं आम की जुबाँ पर रहा और आज भी है। आपने शास्त्रीय रागों का अपने संगीत में बखूबी इस्तेमाल किया है कि सन् 1940–50 के दशक से लेकर आज तक उन गानों की लोकप्रियता यथावत् है। आपने विभिन्न रागों द्वारा उनके नियम और क्लिष्टता को दूर करके अपनी शैली द्वारा ऐसे संगीत का उपयोग किया जिसने सीधे–सीधे जनसामान्य के मर्मस्थल को स्पर्श किया।

नौशाद अली साहब का सिने इंडस्ट्री में पदार्पण सन् 1940 में उनकी पहली फिल्म ''प्रेमनगर'' से हुआ। आपके फिल्मों में पदार्पण के बाद से आपके दिए संगीत की ख्याति तो होने लगी थी किंतु 1944 में आई आपकी फिल्म ''रतन'' वह फिल्म थी जिसकी वजह से उस समय में संगीतकार के रूप में आप शिखर पर पहुँच गए थे। इसके बाद आपके द्वारा निर्देशित सभी फिल्मों का संगीत अत्यंत लोकप्रिय हुआ। आप 1940 से 1975 तक और उसके बाद सन् 2005 तक एक शीर्ष संगीतकार के रूप में हिन्दी सिनेजगत में रहे। आपने 67 फिल्मों में संगीत दिया और उसमें से आपकी 26 फिल्में सिल्वर जुबली, 8 फिल्में गोल्डन जुबली और 4 फिल्में डायमंड जुबली रहीं।

नौशाद साहब ने विभिन्न थाटों के अंतर्गत आने वाले विभिन्न रागों का प्रयोग अपने गीतों में बड़ी कुशलता और सुंदरता से किया है। उनके द्वारा रचित कुछ प्रसिद्ध गीत जो आज भी उतने ही प्रचलित हैं, का विवरण इस प्रकार हैः–

कल्याण थाट			
क्र.	**गीत के बोल**	**फिल्म**	**राग**
1	आए ना बालम वादा करके	पालकी	गौड़ सारंग
2	मधुबन में राधिका नाचे रे	कोहिनूर	हमीर
3	उठाए जा उनके सितम	अंदाज़	केदार
4	दिलरूबा मैंने तेरे प्यार में क्या क्या ना किया	दिल दिया दर्द लिया	यमन
5	दिल–ए–बेताब को सीने से लगाना होगा	पालकी	यमन कल्याण
6	तेरे हुस्न की क्या तारीफ करूँ	लीडर	यमन
बिलावल थाट			
1	तेरे प्यार में दिलदार	मेरे महबूब	बिहाग
2	आज की रात मेरे दिल की सलामी ले ले	राम और श्याम	पहाड़ी
3	आवाज दे कहाँ है	अनमोल घड़ी	पहाड़ी
4	दिल तोड़ने वाले	सन ऑफ इंडिया	पहाड़ी
5	दो सितारों का ज़मीं पर है मिलन	कोहिनूर	पहाड़ी
6	सुहानी रात ढल चुकी	दुलारी	पहाड़ी
7	बचपन की मोहब्बत को	बैजुबावरा	मॉंड
खमाज थाट			
1	चुनरिया कटती जाए रे	मदर इंडिया	खमाज
2	ज़िंदगी आज मेरे नाम से शरमाती है	सन ऑफ इंडिया	जैजेवंती
3	दूर कोई गाए	मेरे महबूब	देस
4	दिल की कश्ती	पालकी	गोरख कल्याण
5	मेरे महबूब तुझे मेरी मोहब्बत की कसम	मेरे महबूब	झिंझोटी
6	शुभ दिन आयो राज दुलारा	मुगल–ए–आज़म	रागेश्री

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

7	मेरी कहानी भूलने वाले	दीदार	तिलंग
भैरवी थाट			
1	तीर खाते जाएँगे	दीवाना	भैरवी
2	दिया ना बुझे री आज हमारा	सन ऑफ इंडिया	भैरवी
3	इंसाफ का मंदिर है ये	अमर	भैरवी
4	तू गंगा की मौज मैं	बैजूबावरा	भैरवी
5	दो हंसो का जोड़ा	गंगा जमुना	भैरवी
6	मन तड़पत हरि दर्शन को आज	बैजूबावरा	मालकौंस
तोड़ी थाट			
1	इंसान बनो	बैजूबावरा	तोड़ी
पूर्वी थाट			
1	तोरी जय जय करतार	बैजूबावरा	पूरियाधनाश्री
2	मुमताज़ तुझे देखा	ताजमहल	पूरियाधनाश्री
मारवा थाट			
1	ये कौन मुझे याद	ताजमहल	पूरिया
काफी थाट			
1	चाह बरबाद करेगी	शाहजहाँ	बागेश्री
2	आज मेरे मन में	आन	भीमपलासी
3	सावन आए ना आए	दिल दिया दर्द लिया	वृन्दावनी सारंग+शुद्ध सारंग
4	मोहे पनघट पे	मुगल–ए–आज़म	धानी
5	ग़म दिए मुश्तकिल	शाहजहाँ	काफी
6	दुःख भरे दिन बीते रे भैया	मदर इंडिया	मेघमल्हार
7	मेरा प्यार भी तू है ये बहार	साथी	पीलू
8	चल दिए दे के ग़म	सन ऑफ इंडिया	नायकी कान्हड़ा
9	ढूँढो रे साजना	गंगा जमुना	पीलू
10	पी के घर आज प्यारी	मदर इंडिया	पीलू
11	झूले में पवन के	बैजूबावरा	पीलू
12	ओ गाड़ी वाले गाड़ी	मदर इंडिया	पीलू
13	महलों में रहने वाले	शबाब	शहाना
आसावरी थाट			
1	दैया रे दैया लाज मोहे लागे	लीडर	दरबारी कान्हड़ा
2	मोहब्बत की झूठी कहानी पे रोए	मुगल–ए–आज़म	दरबारी कान्हड़ा
3	ओ दुनिया के रखवाले	बैजूबावरा	दरबारी कान्हड़ा
4	याद में तेरी जाग जाग के हम	मेरे महबूब	दरबारी कान्हड़ा
5	आज गावत मन मेरो	बैजूबावरा	देसी

ये नौशाद साहब के कुछ मशहूर गीत है। इन गीतों की लोकप्रियता आज भी यथावत है। आपने अपने सभी गीतों में शास्त्रीय रागों का प्रयोग करके शास्त्रीय संगीत के उस्तादों से भी पार्श्वगायन करवाया। फिल्म बैजूबावरा में उन्होंने पं. डी.वी. पलुस्कर और उ. अमीर खाँ साहब से गीत गवाए। और भी अनेक संगीत निर्देशकों ने अपनी कुछ–कुछ रचनाओं में शास्त्रीय रागों का प्रयोग किया है।

आधुनिक समय में नए वाद्ययंत्रों एवं वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग से चित्रपट संगीत में नवीनता का सृजन हुआ है। संगीत निर्देशकों का सौंदर्यबोध, गीतकारों की काव्य शैली, प्रतिभावान गायक गायिकाओं की आवाज, वाद्ययंत्र बजाने वाले कलाकारों

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

की प्रतिभा के योग से फिल्म संगीत से ऐसे कलारत्न प्राप्त हुए हैं जिससे भारतीय संगीत की गरिमा और बढ़ गई है। भारतीय, शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत की शैलियाँ जैसे ख्याल, ठुमरी, तराना, दादरा आदि जिनसे कि जनसाधारण अनभिज्ञ ही रहता है, उनका प्रयोग भी फिल्म संगीत के निर्देशकों ने अपने कौशल से इतने सुंदर ढंग से किया है कि वे जन साधारण में लोकप्रिय हो गई हैं। सुगम संगीत की विधाएँ जैसे कि भजन, ग़ज़ल, लोकगीत आदि का सफ़ल प्रयोग भी बड़ी खूबसूरती से किया गया है।

आज शास्त्रीय संगीत को नए संदर्भों में देखने की आवश्यकता है। उसमें रंजकता की आवश्यकता है। डॉ. प्रभा अत्रे ने ''स्वरमयी'' में लोकप्रिय संगीत को संगीत शिक्षा का एक हिस्सा बनाने की बात कही है। आपने लिखा है– ''अगर हमें शास्त्रीय संगीत की परम्परा को समृद्ध बनाना है तो सिनेमा–संगीत और ग़जल जैसी संगीत विधाओं को अपनी संगीत शिक्षा में शामिल करना होगा। संगीत को केवल शास्त्रीय मानना अपने आप में भ्रम है।''

आधुनिक समय में फिल्म संगीत की धुनों में चंचलता का समावेश ज्यादा दिखाई दे रहा है, पश्चिमी प्रभाव भी बढ़ा है, और इससे संगीत की कलात्मकता तथा माधुर्य भी कम हुआ है। किंतु इसे रोका जा सकता है। फिल्म संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि गरिमा से ओतप्रोत है। जिस तरह नौशाद साहब एवं अन्य कुछ संगीत निर्देशकों ने शास्त्रीयता को सहज सरल बनाकर अनेक दशकों तक, कलात्मकता, माधुर्य एवं आकर्षण से भरपूर संगीत दिया और जिसमें आज भी उतनी ही मिठास है, वैसा ही कार्य हमारे आज के संगीत निर्देशक भी कर सकते हैं।

अतः हम कह सकते है कि आरंभ से लेकर अब तक सिने संगीत में शास्त्रीय संगीत का प्रयोग, संगीत के विकास, प्रचार–प्रसार में अहम् भूमिका निभाता आ रहा है।